9. सत्ता-प्राप्ति की इच्छा-शक्ति

सत्ता पाने की इच्छा-शक्ति राजनीतिक दल के लिए सबसे बड़ी कसौटी है। इस इच्छा-शक्ति के चारों तरफ अपने देश में एक विचित्र दुर्गमता के जंगल को बढ़ने दिया गया है जैसे कि सत्ता की कामना पाप हो या कम से कम वह काम गंदा हो। कमजोर करने वाले इस ढकोसले को खत्म कर देना चाहिए। पूरे मन से सत्ता पाने की इच्छा-शक्ति को ताकतवर बनाना चाहिए। आखिर राजनीतिक दल का अस्तित्व नीतियों और कार्यक्रमों पर ही तो होता है, ऐसी नीतियां और कार्यक्रम जो उसके अनुसार, देश और दुनिया के लिए आवश्यक हैं और जिनको कार्यान्वित करने के लिए सरकार में जाना जरूरी है।

हिंदुस्तान भूख से तड़प रहा है और दुनिया युद्ध की छाया से त्रस्त है; और हिंदुस्तान की प्रजा सोशलिस्ट पार्टी जल्दी-से-जल्दी देश की सरकार बनने का अगर इरादा नहीं रखती तो वह कालधर्म से विमुख होगी। जब जनता और समूची मानवता के तत्व को ही घुन लग गया है, सिर्फ विरोधी दल बनने की ख्वाहिश, अगर पाप नहीं, तो भोंडापन जरूर है।

सोशलिस्ट पार्टी और किसान मजदूर प्रजा पार्टी का विलीनीकरण हो जाने पर, वह पार्टी दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी हो जाएगी। तब वह 1 करोड़ 70 लाख से ज्यादा वोटों का दावा कर सकेगी और ब्रिटिश लेबर पार्टी को भी, जो सबसे बड़ी है, करीब 40 लाख वोटों से पार कर जाएगी। नई पार्टी जल्दी ही राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जिम्मेदारियों को उठाने अगर आगे नहीं बढ़ेगी, तो वह उनमें घिर जाएगी।

जनता ने तो अपनी लोकसभा चुन ही ली और अभी वह साढ़े चार बरस तक चलेगी। लेकिन जनतंत्र, अगर निर्जीव रिवाज में नहीं फंसा, तो वह हमेशा गतिशील, तेजस्वी होता है। जनता का मन जब मूल रूप से परिवर्तित हो जाता है, तब सच्चे जनतंत्र की परिपाटी के अनुसार लोकसभा को बर्खास्त कर दिया जाता है और जनता अपनी इच्छा को नए चुनाव में व्यक्त करती है।

जनता खुद अपना भाग्यविधाता बने, न कि वह भाग्य के भरोसे रहे, इसलिए

Scanned by CamScanner

जनता के मन को गरमाना एक महान जनतांत्रिक कर्तव्य है। जब जनतांत्रिक लोग निष्क्रियता की दुरवस्था का वरण कर लेते हैं तभी हिंसा और उपद्रव के शैतान को खुला मैदान मिलता है।

सत्ता-प्राप्ति की इच्छा-शक्ति निःसंदेह पवित्र और तेजस्वी होनी चाहिए। उसे लंपटपन से उतना ही दूर रहना चाहिए जितना कि कमजोरी से। स्वस्थ इच्छा-शक्ति झूठ, धोखे और हिंसा का इस्तेमाल नहीं करती। केवल प्रतिहत इच्छा-शक्ति लंपट आचरण करती है और उसी की निराशा में स्वाहा हो जाती है। इसके साथ ही कमजोर चेतना वाली इच्छा-शक्ति आगे बढ़ने की ताकत से हाथ धो बैठती है और घटनाओं के प्रवाह में या तो फंस जाती है या अगर वह डूब नहीं जाती तो इधर से उधर थपेड़े खाती रहती है।

नई पार्टी की सत्ता पाने की इच्छा-शक्ति को, जैसे लंपटपन का, वैसे ही कमजोरी का सामना पड़ेगा। कल सत्तारूढ़ होने के लिए शुचिता से प्रयत्न करना उच्च निष्ठा है लेकिन 10 बरसों में या उससे भी ज्यादा समय में अगर सत्ता न हासिल हो तो यह उतना ही पवित्र दायित्व है कि कमजोरी अथवा लंपटपन के सामने घुटने न टेकें।

पुरानी और नई परिस्थितियों पर प्रतिक्रिया की इच्छा-शक्ति से ही किसी आदमी अथवा दल की सत्ता पाने की इच्छा-शक्ति को नापा-तौला जा सकता है। दुनिया में ऐसे बहुत लोग हैं जिनमें प्रतिक्रिया या तो देर में होती है या होती ही नहीं। उनको ललकारा जाता है लेकिन प्रायः उनके कान पर जूं तक नहीं रेंगती।

हिंदुस्तान को अनेक नए और पुराने मामलों में ललकारा जा सकता है लेकिन कहां हैं वे औरतें और मर्द जिनमें प्रतिक्रिया हो और फिर वे हुंकार भरें? ये दोनों पार्टियां, जो एक होने वाली हैं, सत्ता पाने की इच्छा-शक्ति के प्रति और परिस्थितियों की पकड़ के प्रति पर्याप्त जागरूक नहीं थीं और अब नई और पुरानी ललकारों के सामने झट से प्रतिक्रिया करने की योग्यता में उसका पहला इम्तिहान होगा।

मिसाल के लिए, कुछ परिस्थितियों का उल्लेख किया जा सकता है। खास तौर पर कारीगरों, खेत मजूरों, मध्यवर्गों और स्कूल-कॉलेजों से निकले पढ़े-खिले युवकों में बेकारी और आधी भुखमरी भयानक रूप से बढ़ रही है। यही वे तबके हैं जिनकी न कोई आवाज है, न कोई संगठन है। कोई राजनीतिक दल भी अब तक उनके पास नहीं पहुंचा या उनको रोज की घटनाओं के मंच पर लाकर खड़ा नहीं किया।

गांव के नौजवान, कुछ हद तक शहर के नौजवान भी दोनों के पास न शिक्षाप्रद मनलगाव के और न ही स्वास्थ्यवर्धक खेल-कूद के साधन हैं। मां-बाप की मर्जी की शादियां और दहेज की कुरीतियां चलती रहती हैं क्योंकि डर रहता है कि बीच में कहीं कोई ज्यादा उन्मुक्त रिश्ता न कायम हो जाए और अप्रिय परिस्थिति खड़ी हो जाए।

Scanned by CamScanner

आज की शिक्षा से न तो दिमाग ही बनता है और न जीविकोपार्जन के लिए प्रशिक्षण मिलता है। भ्रष्ट लेखकों और प्रकाशकों की चांदी बने, इसलिए हर साल पाठ्य-पुस्तकें बदली जाती हैं और निम्न स्तर की पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं।

सरकारें और नगरपालिकाएं गरीबों के लिए मकान नहीं बनातीं। जिला बोर्डों की आंखों के सामने खेत मजूरों को उनकी झोपड़ियों से हटा दिया जाता है और जनता तथा जनता के राजनीतिक दल टुकुर-टुकुर देखते रहते हैं। देश की विशाल जनशक्ति के हाथ सूखा और बाढ़ की पीड़ा से ऐंठते रहते हैं लेकिन वे हाथ और कुछ नहीं करते क्योंकि कोई भी राजनीतिक दल स्वेच्छया-श्रम और जमीन के बंटवारे का किसी बड़े पैमाने पर मेल-जोल नहीं करा सका।

सरकार अपने संकल्पों को तोड़ती है, अनाज की भीख मांगती है और आयात करती है। फिर भी हम चुप रहते हैं, जबकि बेकारी बढ़ती जाती है और खेती लायक जमीन बहुत है। एक तरफ, गरीबों पर नित नए टैक्स लगाए जाते हैं, और दूसरी तरफ, राजा-रजवाड़ों और करोड़पतियों की पेंशनों और मुनाफों की सुरक्षा का आश्वासन दिया जाता है। कानपुर जैसे शहरों के लोग चमड़े के और दूसरे कारखानों के गंदे पानी को और मलमूत्र को गंगा में चुपचाप मिलने देते हैं, उसी गंगा में जिसमें कि लाखों लोग सिर्फ नहाते ही नहीं, बल्कि दूषित पानी भी पीते हैं।

लोग जैसे अफीम के नशे में हैं और कोई भी राजनीतिक दल इतना जागृत नहीं है कि उनको झकझोर कर उठा दे। भुखमरी जब अपने विकराल रूप में सामने आकर खड़ी हो जाती है, तब बहुत क्षीण आहट होती है; क्योंकि आधा पेट खाने की स्थिति में ही जब राजनीतिक दल कोई हलचल नहीं करता, तब उस पर और जनता पर अकाल और अकालमृत्यु की अवस्था में, जो क्रांति करने का अवसर होता है, घोर नशा छा जाता है।

ऐसी सभी पुरानी और नई परिस्थितियों में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी को अपनी प्रतिक्रिया दिखलानी चाहिए। पहले जागरूक हों तभी तो प्रतिक्रिया होगी और फिर हल सोचने पड़ेंगे और अंततोगत्वा निर्माण की या लड़ाई की दिशा में क्रियाशील होना पड़ेगा। जिंदा पार्टियां ही प्रतिक्रिया दिखलाती हैं और सभी दिशाओं में हाथ-पैर फैलाती हैं। यह सोचना झूठी धारणा है कि एक ढर्रे से या आजमाए हुए तरीकों से शक्ति का ठीक-ठीक उपयोग होता है। जिंदा पार्टी काम को बढ़ाकर ही अपनी शक्ति का विस्तार करती है।

सिंचाई के लिए बांध बांधने, नाले बनाने जैसे रचनात्मक काम प्रजा सोशलिस्ट पार्टी को करने पड़ेंगे और इसे एक राष्ट्रीय आदत का रूप देना होगा। आज तो यह सब अक्सर रस्म अदायगी के रूप में हो रहा है। जहां कहीं भी सामुदायिक योजनाएं

Scanned by CamScanner

चल रही हैं उनमें उसे सहयोग देना पड़ेगा। स्वेच्छया-श्रम के साथ-साथ तैराकी जैसे खेल-कूद के लिए उसे गांव के युवकों को तैयार करना होगा। जनता की खाने-पीने, शादी-ब्याह और बच्चे पैदा करने की आदतों में परिर्वतन करने की उसे कोशिश करनी चाहिए। मल-मूत्र की खाद बनाने के लिए, मकान बनाने के लिए और मुफ्त इलाज और दवा के लिए उसे नगरपालिकाओं, जिला बोर्डों और ग्राम-पंचायतों को अपने हाथ में लेना चाहिए।

उसे यह नहीं भूलना चाहिए कि रचनात्मक काम और सहयोग की इच्छा-शक्ति, आंदोलन और लड़ाई करने की इच्छा-शक्ति का दूसरा पहलू है और दोनों का साथ होने पर ही सत्ता पाने की इच्छा-शक्ति बनती है। जो रचना करना नहीं जानते वे शुचिता से लड़ना भी नहीं जान सकते।

आधे सच और आधे मन से काम करना हिंदुस्तानी राजनीति का खास रोग है। आधे मन से आंदोलन करने का नतीजा होता है कि रचनात्मक काम भी आधे मन से होता है और राजनीति दोनों धुरियों के बीच भटकती रहती है और कोई सारपूर्ण उपलब्धि भी नहीं होती।

बिना आंदोलन के और बिना लड़ाई के राजनीतिक दल चल नहीं सकता। बढ़ती हुई बेकारी और आधे पेट खाने और गरीबों पर नित नए टैक्स लगने की अवस्था में वह हाथ पर हाथ धरे बैठा रहे तो अकाल की अवस्था में वह लकवामार हो ही जाएगा। बच्चा भी यह जानता है कि 2 या 3 साल में अकाल जनता को खा सकता है। उस अकाल को रोकने के लिए और सरकार को मजबूर करने के लिए कि जनता के मत को वह फिर से ले, अब यह जरूरी हो गया है कि जहां कहीं बेकारी और आधे पेट भोजन की अवस्था हो, वहां सरकार से लड़ा जाए।

सोशलिस्ट पार्टी और किसान मजदूर प्रजा पार्टी का संयुक्त सम्मेलन विस्तार में इन मामलों में जाए या न जाए लेकिन उसे जागरूक रहना चाहिए कि बातचीत की यही पृष्ठभूमि है। सितंबर 20 को, इस सम्मेलन के 5 दिन पहले, बेकारी और आधे पेट भोजन के आम मसलों पर जनता को एकत्रित करने का अवसर मिलेगा। इसके पहले की तैयारियां कैसी हुईं; कारीगरों, मध्यवर्गी और पढ़े-लिखे युवकों से समाजवादी किस हद तक संपर्क स्थापित कर सके; कितनी बार कामदिलाऊ दफ्तर गए; और अंततोगत्वा सत्ता पाने की इच्छा-शक्ति और परिस्थितियों की पकड़—इन सब बातों पर उस दिवस की सफलता निर्भर करेगी। नई जमीन जोतने के लिए 5 लाख की अन्नसेना भर्ती करो, शहर बनाने के खंड स्थापित करो, और कारीगरों को कच्चा माल दिलाने, माल का बाजार तैयार करने और शुद्ध माल दिलाने के लिए सरकारी मंत्रियों या विशेष अफसरों की नियुक्ति—इन सीधी-सादी मांगों पर आंदोलन चल सकता है।

Scanned by CamScanner

आधे भूखे को हल्ला बोलना चाहिए और प्रदर्शन करना चाहिए ताकि सरकार जनता को भोजन देने की अपनी जिम्मेदारी दूसरों पर न ढकेल सके या उससे मुकर जाए, और न ही जनता अकाल को दैवी-कोप मानकर निढाल हो जाए।

किसी नई पार्टी के निर्माण की इससे बढ़कर और कौन-सी शुभ घड़ी हो सकती है। अब यह प्रजा सोशलिस्ट पार्टी का काम होगा कि वह लगातार जनता को मजबूती से संगठित करे और उसके मन को गरमाए। सत्ता पाने की इच्छा-शक्ति की विकृत हरकतों पर रोक लगा देनी चाहिए। राष्ट्रीय आंदोलनों और स्थानिक सत्याग्रहों का अवसर अब आ गया है। किसी की असमय राष्ट्रीय सिविल नाफरमानी करने की कोशिश करके शक्ति का ह्रास नहीं करना चाहिए।

सैद्धांतिक प्रश्नों का भी, जिनमें बनाने और बिगाड़ने की शक्ति होती है, पार्टी को सामना करना पड़ेगा। जीवन की दृष्टि का और जीने के प्रयोजन का जो भावार्थ होता है, यही आखिर सत्ता पाने की इच्छा-शक्ति और जागरूकता की क्षमता के स्रोत है। लक्ष्यों पर बेशक ऐसी बहसें होंगी या कम से कम बातचीत की पृष्ठभूमि में ये रहेंगी। इस बारे में एक समाजवादी साथी की साक्षी, जिसने हिटलर की जेलों में कई साल व्यतीत किए और जो आखिर में मार डाला गया, अमूल्य है। व्यक्तिगत नतीजों से सहमति सर्वमान्य न होने पर भी, ऐसी साक्षियां, जो खून से लिखी गईं, दृष्टि को गहरी बनाती हैं। जर्मनी में सामाजिक जनतंत्र की असफलता के कारणों को जूलियस लेबर ने उघाड़ कर रख दिया है।

जर्मनी की सोशलिस्ट पार्टी के दो पीढ़ियों तक विरोधी पार्टी ही बने रहने के कारण उसकी सत्ता पाने की इच्छा-शक्ति कमजोर हो गई और इसीलिए वह बहस की खातिर बहस के स्तर से कभी ऊपर उठ ही नहीं सकी। मार्क्सवाद को उसने अपना आधार बनाया। उसी दर्शन का, उसकी खामियों और गलत व्याख्याओं सहित, वह लगातार ढोल पीटती रही। इसलिए उसके विचारों की ताजगी खत्म हो गई और वह सिर्फ उद्धरणों के चक्कर में पड़ गई।

जर्मनी की सोशलिस्ट पार्टी सिर्फ विरोध करती थी, मार्क्सवादी थी; और इसलिए उसकी आत्मा बिखर गई और अधूरे कामों में उसकी परिणति हुई। लेबर की यह साक्षी हमारे युग का ऐसा दस्तावेज है जो मन को झकझोर देता है। एक बार उसको हाथ में ले लेने के बाद, चाहे कितनी ही रात क्यों न बीत जाए, उसे छोड़ने का मन नहीं करता और सुबह होते-होते जब वह पूरा हो जाता है तो मन में बड़ी पीड़ा होती है लेकिन उसके साथ ही, उतना ही दृढ़ संकल्प होता है कि ऐसी बातें फिर न होने दी जाएंगी।

प्रजा सोशलिस्ट पार्टी का वह तबका, जो मार्क्सवाद के पीछे पड़ा हुआ है, पार्टी की विचारधारा को अवरुद्ध करने का प्रयत्न करेगा। इसी तरह पार्टी का एक तबका

Scanned by CamScanner

गांधीवाद के पीछे पड़ सकता है। इससे मार्क्स और गांधी निष्फल होंगे क्योंकि उनकी गलतियां और विकृतियां तो रह जाएंगी, लेकिन उनमें जो सत्व है, वह गायब हो जाएगा। आज की मानवी विचारधाराओं में एक बड़ा दोष आ गया है कि वे सब अभियोग और प्रतिवाद की ढपलियां बन गई हैं और एक-दूसरे को समझने की कोशिश बहुत कम होती है।

जीवन के विभिन्न भावार्थ और इतिहास की व्याख्या, अध्यात्मवाद और भौतिकवाद का संबंध, पूंजीवाद का आर्थिक विवेचन और वर्ग-संघर्ष के तरीके और मानव सभ्यता के नियमों की कल्पनाएं—ये सब अभियोग और प्रतिवाद के कूड़े में अस्त-व्यस्त पड़े हैं।

प्रजा सोशलिस्ट पार्टी को मनुष्य के मन के लिए एक नया घर बनाने की कोशिश करनी चाहिए क्योंकि अब तक बने सभी घर टूट चुके हैं। सत्ता पाने की इच्छा-शक्ति को तो वह व्यक्त करे ही, साथ ही साथ उसे समाजवाद की कल्पना को साकार करना चाहिए। वर्तमान सभ्यता में पैबंद लगाने या उसे सुधारने का जमाना अब लद गया।

नई सभ्यता और जीवन के नए भावार्थ के लिए मानवता तड़प रही है। नई पार्टी जिस हद तक इस मासूम तड़प को सिद्धांतों की कल्पना में पिरो सकती है, उसी हद तक वह अपने अंतर्राष्ट्रीय कर्तव्यों का पालन कर सकेगी। जिस हद तक वह सत्ता पाने की इच्छा-शक्ति को अभिव्यक्त कर सकती है और अभेद्य रख सकती है, उसी हद तक वह राष्ट्रीय उत्तरदायित्वों का वहन कर सकेगी। सिद्धांतों का विस्तार और सत्ता पाने की इच्छा-शक्ति परस्पर निर्भर करने वाले उद्यम हैं और एक-दूसरे पर वे जीवित रहते हैं।

— 1952, सितंबर

Scanned by CamScanner